Deg-1
1413(H)

मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय भारत की राजनीतिक दशा:-

महमूद गजनवी और मुहम्मद गोरी दोनों के भारतीय आक्रमण के बीच 148 वर्षों का अन्तराल था। महमूद गजनवी ने 1027 ई० में भारत पर आक्रमण किया और तीव्र गति से एक के बाद दूसरे राज्यों को नष्ट करता चला गया। अपार सम्पति की बर्बादी के बावजूद भारतीय शासकों ने विदेशी शक्तियों का सामना करने के लिए कोई संगठन की स्थापना नहीं की था। उनमें पहले जैसे ही फूट, प्रतिस्पर्धा और एक दूसरे के प्रति घृणा की भावना थी। राजनीतिक दृष्टि से भारत छोटे-छोटे राज्यों का एक समूह मात्र था। शक्तिशाली राजपूत स्वयं वंशानुगत प्रतिस्पर्धा की आग में झुलस रहे थे। वे अपनी शक्ति का अपव्यय कर रहे थे और विदेशी शक्तियों के अपमान की उन्हें कोई चिन्ता नहीं थी। वस्तुत: मुहम्मद गोरी के आक्रमण के समय भारत का मानचित्र लगभग वैसा ही था जैसा महमूद गजनवी के समय था।

राजनीतिक दृष्टि से भारत अनेक छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था। उसमें सहयोग एवं एकता का भाव नहीं था। राष्ट्रीयता एवं देशभक्ति की भावना के बदले वे वंश की प्रतिष्ठा की रक्षा करना अपना आदर्श मानते थे। परस्पर युद्ध में संलग्न रहने के कारण वे संगठित होकर विदेशी आक्रमणकारियों का सामना करने की बात सोच नहीं पाते थे।

P.T.O

Scanned with CamScanner

भारत में सार्वभौम सत्ता का अभाव था। जिससे विदेशियों ने मुल्तान, सिन्ध और पंजाब में अपना राज्य कायम कर लिया था। साधारण जनता राजनीतिक परिवर्तन के प्रति उदासीन थी। भारतीय शासकों में पृथकता की भावना, विदेशी शत्रुओं की गति-विधि के प्रति उपेक्षा की नीति, सैनिक संगठन सम्बन्धी दोष आदि ऐसे तत्व थे जो विदेशी आक्रमणकारियों के लिए लाभदायक स्थिति उत्पन्न कर देते थे।

सामाजिक आर्थिक और प्रशासनिक जीवन में भी गतिरोध आ गया था। समाज में वर्ण व्यवस्था, भेदभाव, छुआछूत आदि के कारण एक दूसरे के प्रति घृणा की भावना काम कर रही थी। भारतीय समाज अधःपतन की ओर था। मुसलमानों का प्रवेश भारत में हो चुका था। वे छोटी-छोटी बस्तियों में रहने लगे थे और भारतीय राजनीति को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करने लगे थे। अर्थ व्यवस्था, धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन में राजनीति के आक्रमण के बाद भी कोई परिवर्तन नहीं आया था। भारतीय जनता में चेतना का अभाव था। उनकी शक्ति तथा प्रगति के मूल स्रोत सूख चुके थे।